# जकात, सदका-ए-फित्र का बयान

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

## ☞ ज़कात रोज़गार की बराबरी के लिए.

सदका का लफ्ज जकात के लिये भी इस्तेमाल होता हे जिस्का अदा करना जरूरी हे, और यहां यही मुराद हे और उस्का इतलाक [जारी होना] हर उस माल पर भी होता हे जो खुद आदमी अपनी खुशी से अल्लाह के रास्ते मे खर्च करता हे इस हदीस का लफ्ज "तुरद्दु" [लौटाया जायेगा] साफ साफ बताता हे कि जकात जो मालदारो से वसूल की जायेगी वो असल मे सोसाईटी के गरीबो और जरूरतमंदो का हक हे जो उन्हे दिलवाया जायेगा. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

## ☞ ज़कात अदा ना करने का अंजाम.

रसूलुल्लाहﷺ का फरमान हे कि जिस शख्स को अल्लाह ने माल दिया और फिर उसने उस्की जकात नही अदा की उस्का

माल कयामत के दिन बहुत ही जेहरीले साप की शक्ल का हो जायेगा जिस्के सिर पर दो काले नुकते होगे [ये बहुत ही जहरीले होने की निशानी हे] और वो उस्के गले का तौक बन जायेगा, फिर उस्के दोनो जबडो को ये साप पकडेगा और कहेगा मे तेरा माल हूं, मे तेरा खजाना हूं.

फिर रसूलुल्लाहﷺ ने कुरान की ये आयत पढी 'आले इमरान /१८०' तरजुमा- यानी वो लोग जो अपने माल को खर्च करने मे कनजूसी करते हे वो ये ना सोचे कि उन्की ये कजूसी उन्के हक मे बेहतर होगी बल्की वो बुरी होगी. उन्का ये माल कयामत के दिन उन्के गले का तौक बन जायेगा. यानी वो उन्के लिये तबाही व बरबादी का सबब होगा. [बुखारी रिवायत का खुलासा]

### ☞ ज़कात अदा ना करना माल की बरबादी का सब्ब हैं.

आयशा (रदी) फरमाती हे की मेने रसूलुल्लाहﷺ को ये फरमाते सुना हे कि जिस माल मे से जकात ना निकाली जाये और वो उसी मे मिली जुली रहे तो वो माल को तबाह करके

छोडती हे.

तबाह करने से मुराद ये नही हे कि जो कोई शख्स जकात ना दे और खुद ही खाये तो हर हालत मे उस्का पूरा सरमाया तबाह हो जायेगा बल्की तबाही से मुराद ये हे कि वो माल जिस से फायदा उठाने का उस्को हक ना था और जो गरीबो ही का हिस्सा था उसने उसे खाकर अपने दीन व इमान को तबाह किया. इमाम अहमद बिन हबल ने यही तशरीह की हे और ऐसा भी देखने मे आया हे कि जकात मार खाने वाले का पूरा सरमाया अचानक तबाह हो गया हे. [मिश्कात; रिवायत का खुलासा]

## ☞ अनाज की ज़कात.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो जमीन बारिश के पानी से या बहते चश्मे से सीची जाती हो या दरिया के करीब होने की वजह से पानी देने की जरूरत ना पडती हो, उन्की पैदावार का दसवा हिस्सा जकात के तौर पर निकाला जायेगा और जिनको मजदूर लगा कर सीचा जाये उनमे बीसवा हिस्सा हे.

[बुखारी, इबने उमर रदी, रिवायत का खुलासा]

## ☞ सदक ए फित्र का मकसद.

रसूलुल्लाहﷺ का फरमान हे कि सदक-ए-फित्र जो शरीयत मे वाजिब किया गया हे उस्के अन्दर दो खूबियां काम कर रही हे, एक ये कि रोजेदार से रोजा की हालत मे कोशिश के बावजूद जो कमी और कमजोरी रह जाती हे उस माल के जरीये उस्की तलाफी हो जाती हे, और दूसरा मकसद ये हे कि जिस दिन सारे मुसलमान ईद की खुशी मना रहे होते हे उस दिन सोसाइटी के गरीब लोग फाका से ना रहे, बल्की उन्की खुराक का कुछ ना कुछ इन्तेजाम हो जाये, शायद यही वजह हे कि घर के सारे ही लोगो पर फित्र वाजिब किया गया हे और इद की नमाज से पहले देने को कहा गया हे. [अबू दाउद; रिवायत का खुलासा]